उपसंहार

उपसंहार

नयी पीढ़ी के प्रख्यात, प्रखर और प्रगतिचेता समीक्षक, कथाकार डॉ. देवेश ठाकुर आज हिन्दी के प्रमुख समीक्षकों और कथाकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं । उनके पास दूरगामी दृष्टि है और उनका लेखन सामाजिक चेतना से सम्पृक्त है । समकालीन रचनाकारों में देवेशजी का नाम अज्ञात और अपरिचित नहीं है । समीक्षा क्षेत्र के साथ-साथ कृति लेखन में भी इन्होंने अपने निश्चित, प्रगतिशील और वस्तुपरक दृष्टिकोण से एक ओर अनेक विवादों को आमन्त्रित किया है तो दूसरी ओर ख्याति प्राप्त विद्वानों में प्रशंसा भी अर्जित की है । इस प्रकार अपने विविधमुखी और खास कर उपन्यास लेखन के माध्यम से उन्होंने अपनी रचनाधर्मी दृष्टि को सफलता के साथ प्रतिष्ठित किया है । देवेशजी के 'भ्रमभंग' के प्रकाशन के बाद ही उन्हें एक सफल कथाकार के रूप में स्वीकृति मिल गई । उन्होंने आज तक सात उपन्यास लिखकर अपनी विशिष्ट प्रतिभा का परिचय दिया है । पिछले पैंतीस सालों से इन्होंने महानगरी बम्बई को अनेक कोणों से देखा है, परखा है । परिणामतः इनके प्रत्येक उपन्यास में महानगरीय जीवन को और महानगरीय समस्याओं को खुलकर अभिव्यक्ति मिली है । प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध में १९७५ से लेकर १९८९ तक के 'भ्रमभंग', 'प्रिय शबनम', 'काँचघर', 'इसीलिए', 'अपना अपना आकाश', 'जनगाथा', 'गुरु-कुल' आदि सात उपन्यासों में चित्रित 'महानगरीय समस्याओं' का अनुशीलन किया है । प्रस्तुत शोध-कार्य के दौरान किए गए अध्ययन से एक बात स्पष्ट रूप से अभिलक्षित होती है कि उनके सभी उपन्यासों में महानगरीय जीवन में उत्पन्न होनेवाली विविध समस्याओं का उद्‌घाटन अत्यंत प्रभावीशाली ढंग से हुआ है ।

इस बात को स्वीकृति मिल चुकी है कि लेखक की कृतियों में उसका जीवन और व्यक्तित्व प्रतिबिम्बित होता है । एक स्थान पर देवेश ठाकुर ने कहा है, **''साहित्यकार के व्यक्तित्व को उसके कृतित्व से, या कृतित्व को उसके व्यक्तित्व से अलग करके नहीं देखा जा सकता । नहीं देखा जाना चाहिए ।''** इसलिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में देवेशजी के व्यक्तित्व का संक्षिप्त परिचय दिया है क्योंकि व्यक्तित्व को परखने के बाद ही उनके उपन्यासों में चित्रित अनेक चरित्रों में हम देवेशजी को ढुँढ सकते हैं । 'भ्रमभंग' जैसा उपन्यास डॉ. देवेशजी के जीवन का अंश ही है । व्यक्तित्व परिचय के बाद उनकी कृतियों का संक्षिप्त आलेख प्रस्तुत किया है जिसमें प्रारम्भिक रचनाओं से लेकर अप्रकाशित उपन्यास 'शून्य से शिखर' तक का संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास किया है ।

दूसरे अध्याय में देवेशजी के महानगरीय जीवन से सम्बन्ध रखनेवाले लगभग सभी उपन्यासों की कथा वस्तु को स्पष्ट करने का प्रयास किया है । इनके 'भ्रमभंग', 'प्रिय शबनम!,' 'काँचघर', 'इसीलिए', 'अपना अपना आकाश', 'जनगाथा' और 'गुरु-कुल' आदि सभी उपन्यासों में महानगरीय जीवन को और महानगरीय समस्याओं को खुल कर अभिव्यक्ति मिली है । खास कर इन उपन्यासों में इन्होंने मध्यवर्गीयों की विडम्बनाओं और विसंगतियों को चित्रित करने का प्रयास अत्यंत सफलता के साथ किया है । देवेशजी ने औपन्यासिक रचनाओं का निर्माण करते समय विविध शैलियों का प्रयोग किया है । इनकी सभी उपन्यास कथ्य और शैली की दृष्टि से समान रूप से महत्व रखते हैं । 'भ्रमभंग' की कथा नायक चंदन द्वारा आत्मकथनात्मक शैली में अभिव्यक्त हुई है । इसमें देहरादून की घाटियों से बम्बई जैसे महानगर में नौकरी के लिए आए एक ऐसे नवयुवक की कथा है जो अनेक संकटों को और संघर्षो को पार कर अंत में प्रोफेसर बनता है और महानगरीय जीवन का एक अंग बन कर रह जाता है । इसमें चंदन के परिवार, मित्र और जीवन मूल्यों से सम्बन्धित अनेक भ्रम भंग होते हैं । 'प्रिय शबनम!' एक लम्बे पत्र के रूप में लिखी हुई अनुठी औपन्यासिक कृति है । इसमें भी कोटद्वार नामक छोटे कस्बे से बम्बई आए प्रो. मंगलसिंह और उसकी प्रेमिका शबनम की कथा है । इसमें एक मध्यवर्गीय युवक के अन्तर्मन की गहराइयों को छूने का उद्देश्य स्पष्ट होता है । मध्यवर्गीय प्रो. मंगलसिंह और उच्चवर्गीया शबनम के माध्यम से लेखक ने महानगरों में व्याप्त वर्गीय विषमता को और मानसिकता को अभिव्यक्ति दी है । इस में शम्भूदा के चरित्र के माध्यमसे लेखकने मार्क्सवादी विचारधारा और सच्चे मार्क्सवादी की परिभाषा देने का प्रयत्न किया है । तीसरा उपन्यास 'काँचघर' सम्वाद शैली में लिखा हुआ हिन्दी का पहला उपन्यास है । इसमें महानगरी बम्बई के एक रेस्तराँ में अलग-अलग मेजों पर बातचित करनेवाले अनेक वर्ग के लोगों का पर्दाफाश किया है । 'काँचघर' के माध्यम से लेखक ने महानगरी बम्बई के व्यस्त जीवन में त्रस्त हर व्यक्ति के मन की अतल गहराइयों तक पहुँचने का प्रयास

---

१. डॉ. देवेश ठाकुर, 'भ्रमभंग', पृष्ठ ६२.

किया है । 'काँचघर' में मेजों पर बातचित करनेवाले लोग प्रेम, जीवन, राजनीति, समाज, देश आदि अनेक विषयों पर चर्चा कर के अदृष्य हो जाते हैं । इसमें प्रारम्भ से अन्त तक चलनेवाली सुहास और सुमी की कथा भी आती है । 'अपना अपना आकाश' देवेशजी का चौथा उपन्यास है । यह उपन्यास परम्परागत वर्णनात्मक शैली में लिखा हुआ है। किन्तु कथ्य की दृष्टि से यह भी अत्यंत महत्वपूर्ण बन पड़ा है । इसमें प्रिया और प्रकाश की प्रेम कहानी के साथ साथ लेखन ने इस बात की ओर संकेत किया है कि प्रत्येक व्यक्ति का अपना वर्ग होता है और अपना परिवेश होता है । एक वर्ग के संस्कारोंवाला व्यक्ति दूसरे वर्ग के संस्कारों के साथ अपना ताल-मेल नहीं बिठा पाता और वर्गीय विषमता के कारण सम्बन्ध टूटने तक की नौबत आ सकती है । प्रस्तुत उपन्यास में प्रकृति का मनोहारी वर्णन मिलता है तथा लेखकने परिवेश और संस्कारों की विसंगतियों का वस्तुपरक निरूपण और समाधान देने का प्रयास किया है । 'जनगाथा' मिश्रित शैली में लिखा हुआ, शिल्प का नया स्वाद देनेवाला हिन्दी का पहला उपन्यास है । इस देवेशजी के उपन्यास के लेखक ने अपनी साली शकुन की करूण कथा को प्रस्तुत करते हुए अपनी 'लेखन-प्रक्रिया' की कथा को स्पष्ट करने का प्रयास किया है । हिन्दी उपन्यास साहित्य में यह अपने ढंग का प्रथम प्रयास है । 'शकुन' और 'लेखन प्रक्रिया' की कथा के साथ साथ इसमें वर्तमान भ्रष्ट व्यवस्था, शिक्षा क्षेत्र की बुराइयाँ, विविध वर्गों के लोगों की मुखौटेबाजी, पत्रकार और पत्रकारिता आदि अनेक समस्याओं का वर्णन किया हैं । 'जनगाथा' में एक विशेष बात पर ध्यान देना आवश्यक होता कि इसमें वर्तमान भारतीय राजनेताओं और लेखकों के प्रत्यक्ष नाम देकर अनेक उनके आडम्बरों का पर्दाफाश करने का साहस लेखक ने दिखाया है । एक प्रकार से 'जनगाथा' भारतीय जनता की गाथा ही बन जाती है । 'गुरु-कुल' शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त बुराईयों का भण्डाफोड़ करने वाला सफल उपन्यास है । इसमें आनेवालें ओछेलाल, तिवारी, जैन आदि चरित्रों के माध्यम से विश्वविद्यालयों में चलनेवाले भ्रष्टाचार, जोड़-तोड़ की राजनीति और मुखौटेबाजी का पर्दाफाश किया है ।

तीसरे अध्याय में महानगरीय समस्याओं के स्वरूप विवेचन को स्पष्ट किया है । इसके अंतर्गत गाँव से लेकर नगर तक और नगर से लेकर महानगर, विशालनगर तक का संक्षिप्त विकास क्रम देने का प्रयास किया है । स्वातंत्र्योत्तर काल में औद्योगिक क्रांति के बाद होनेवाला नगरों, महानगरों का विकास आदि पर संक्षिप्त रूप से विचार किया है । इसमें नगरीकरण के संक्षिप्त कारणों की चर्चा भी की है । इन कारणों में औद्योगिकरण, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक यातायात और संचार के माध्यम आदि कारणों को संक्षप में स्पष्ट किया है । इसी अध्याय में गाँव और शहर के भेदों की ओर भी ध्यान दिया है । छोटे गाँवो से लेकर विशाल नगरों तक मानव की यात्रा को मुख्य कारण रहा है - उसका महानगरों के प्रति बढनेवाला आकर्षण ! रोजी-रोटी की तलाश में, नौकरी के लिए, उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए, व्यवसाय के लिए, अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिए हजारों, लाखों लोगों के रेलें के रेलें महानगरों की ओर बढ़ते हुए दिखाई देते हैं । इस अध्याय के अंत में नगरों का वर्गीकरण दिया है ।

चौथे अध्याय में देवेश ठाकुर के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय समस्याओं का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया है । देवेश ठाकुर के लगभग सभी उपन्यास 'भ्रमभंग', 'प्रिय शबनम!', 'काँचघर', 'इसीलिए', 'अपना अपना आकाश', 'जनगाथा' और 'गुरु-कुल' आदि महानगरीय जीवन की अभिव्यक्ति देनेवाले उपन्यास हैं । इस में महानगररीय जीवन में निर्माण होनेवाली निम्नांकित समस्याओं की चर्चा करने का प्रयास किया है –

१. **महानगरों में अपने लोग, अपना गाँव, कस्बे का परिवेश और जीवन मूल्य छूटने का दर्द**
२. **महानगरों में मकान की समस्या और गंदी बस्तियों का चित्रण**
३. **महानगरों में यातायात की समस्या**
४. **महानगर में आर्थिक तंगी**
५. **महानगरों में अर्थकेन्द्रित रिश्तें**
६. **महानगरीय जीवन में होटल, क्लब, रेस्तराँ आदि**
७. **महानगरों में असुरक्षितता की समस्या**
८. **महानगरीय जीवन में छोटेपन का अहसास**
९. **महानगरों में अकेलेपन की समस्या**

१०. महानगरीय जीवन में व्यक्ति की विक्षिप्त मनोदशा
११. महानगरों में विलासिता के बढ़ते चरण और सम्बन्धों की शिथिलता
१२. महानगरों में वेश्या-समस्या
१३. महानगरों में शिक्षा-क्षेत्र की समस्याएँ
१४. महानगरों में डॉक्टर और अस्पताल की समस्या

देवेश ठाकुर ने अपने सभी उपन्यासों में महानगरीय समस्याओं का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है । ऐसा लगता है की देवेशजी ने महानगरी बम्बई का कोना कोना छान मारा है । नौकरी, व्यवसाय या उच्च शिक्षा प्राप्त करने के हेतु महानगर में गाव या कस्बे से आनेवाला हर व्यक्ति यहाँ महानगर में अपना ताल-मेल नहीं बिठा पाता देवेशजी के उपन्यासों में अनेक पात्र अपने गाँव की याद में खोये दिखाई देते हैं और जीवन मूल्यों को टूटते हुए देखकर व्यथित होते हैं । महानगर में आनेवाले व्यक्ति की नौकरी की समस्या तो हल होती है; किन्तु मकान और यातायात की समस्या को हल करते करते वह थक जाता है । देवेशजी के उपन्यासों के सभी नायक मध्यवर्गीय वातावरण में पले-बढ़े है, और उन्हें मकान की और यातायात की समस्यासे जूझते हुए हम देख सकते हैं । महानगरों में पैसा ही भगवान कां रूप ले रहा है । अपना जीवन स्तर उँचा रखने के लिए यहाँ हर व्यक्ति पैसे कमाने की और खर्च की होड़ मे लगा हुआ दिखाई देता है । परिणामस्वरूप आर्थिक तंगी और रिश्ते-नातों में अर्थकेन्द्रितता दृष्टिगत होती है । 'भ्रमभंग' का चंदन 'प्रिय शबनम' का मंगल, 'काँचघर' का सुहास और अनेक पात्र, 'अपना अपना आकाश' का प्रकाश, 'जनगाथा' का लेखक शिवनाथ और पत्रकार जोशी आदि अनेक पात्र महानगरों की अर्थकन्द्रितता और आर्थिक तंगी के कारण त्रस्त दिखाई देते हैं ।

देवेश ठाकुर ने महानगरों में पनपने वाली होटल संस्कृति का भी जिक्र किया है । बड़े बड़े होटलों में और रेस्तराँओं में कालाबाजारी, तस्करी और वेश्या-वृत्ति आदि सब कुछ चलता है । इनके उपन्यासों में चित्रित लगभग सभी नायकों को हम बारबार होटल में देख सकते हैं । अर्थाभाव और यातायात की विकराल समस्या के कारण महानगरों में रहनेवाला व्यक्ति असुरक्षित बनता जा रहा है । महानगर के इस पहलुओं को भी देवशजीने स्पर्श किया है । महानगरों की पैसों की चकाचौंध और नवधनिकों की ऐयाशी देखकर हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी वर्ग का क्यों न हो, अपने आप को छोटा समझता है और इस छोटेपन के अहसास को भोगता है । इस समस्या के बाद और एक समस्या सामने आती है –अकेलेपन की । महानगरों में व्यस्तता के कारण व्यक्ति भीड़ में भी अेकला रहता है । सब-के बीच होते हुए भी अलगाव और परायपन को महसूस करता है । परिणामस्वरूप सब के बीच होते हुए भी वह अकेलेपन की पीड़ा को भोगता है । देवेशजी के उपन्यासों में अकेलेपन की पीड़ा को भोगनेवाले अनेक चरित्रों का चित्रण हुआ है । उपर्युक्त सभी समस्याओं के कारण महानगर का व्यक्ति अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है और कभी कभी विक्षिप्तता की दशा में पहुँचता है । देवेश जी के उपन्यासों में स्थान स्थान पर आत्महत्या की बात करनेवाले और तोड़-फोड़, खून खराबा करने की बात करनेवाले अनेक चरित्र चित्रित हुए हैं ।

देवेशजीने स्त्री पुरुष सम्बन्धों का विस्तृत चित्रण करते हुए, इन सम्बन्धों के विविध स्तरों को अत्यंत सूक्ष्मतासे और प्रामाणिकता से अंकित किया है । वर्तमान युग में व्यस्तता के कारण पारिवारिक सम्बन्ध स्वस्थ नहीं रह पा रहे हैं और स्त्री-पुरुषों में बन रहे तनाव उनके टूटने तक की स्थिति तक पहुँच चुके हैं । भारतीय युवा पीढ़ीने 'फ्री-लव' को फैशन के रूप में स्वीकार किया है और भारतीय स्त्री ने अपना परम्परागत रूप बदल कर स्त्री स्वातंत्र्य की और पुरुषों के समकक्ष अधिकारों की माँग की है । देवेशजी ने महानगरों में बढ़नें वाली विलासिता के अनेक रूप और स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की शिथिलता को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है । वेश्या-वृत्ति ने भी अपना परम्परागत रूप बदल दिया है । अब महानगरों में मध्यवर्गीय, उच्चवर्गीय, अभिजात्य नारी भी 'कॉलगर्ल' के रूप में अपने शरीर का सौदा करने लगी है । देवेशजी ने अपने उपन्यासों में वेश्याओं के अनेक बदलते रुपों को चित्रित किया है ।

देवेशजी खुद शिक्षा क्षेत्र से सम्बन्ध रखते हैं । बम्बई विश्विविद्यालय में चलनेवाली गिरोहबाजी और भ्रष्टाचार को उन्होंने अपनी आँखों से देखा है और भोगा भी है । परिणामस्वरूप उन्होंने उपन्यासों में शिक्षा-क्षेत्र की बुराइयों को चित्रित किया है । शिक्षा-क्षेत्र में राजनीति का दखल, नियुक्तियों में भ्रष्टाचार, अध्यापकों की रुग्ण मानसिकता, शिक्षा-क्षेत्र में जोड़-तोड़ और सम्पर्कवाद की ग्रजनीति आदि का सुन्दर वर्णन 'भ्रमभंग', 'जनगाथा' और 'गुरु-कुल' आदि उपन्यासों में चित्रित हुआ है । देवेशजी

नें महानगरों के अस्पताल और डॉक्टरों की ओर भी वक्र दृष्टि देखा है । अस्पतालों की गंदगी और डॉक्टरों के घिनौने कारनामों को भी उन्होंने वाणी दी है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के विषय चुनाव के साथ मेरे मन में उपस्थित होनेवाले अनेक प्रश्नों का समाधान निम्नांकित है –

जहॉ तक देवेशजी के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जीवन का प्रश्न है, उनके लगभग सभी उपन्यासों में महानगरीय जीवन को अभिव्यक्ति मिली है । पिछले ३५ सालों से देवेशजी महानगर बम्बई में रह रहे हैं । परिणामस्वरूप बम्बई के महानगरीय जीवन के विविध स्तरों का चित्रण इसमें व्यापक मात्रा में हुआ है । महानगरों के चित्रण में महानगरों के सभी पहलुओं को स्पर्श करने का उनका प्रयास दिखाई देता है ।

जैसा की कहा जा जुका है देवेशजी के उपन्यासों की मूल सम्वेदना महानगरीय है । उन्होंने महानगरीय जीवन का वर्णन करते समय स्थान-स्थान पर महानगरों की अनेक समस्याओं का चित्रण सफलता के साथ किया है । महानगरों की मकान, यातायात, असुरक्षितता, होटल आदि अनेक समस्याओं की भयंकरता को वाणी दी है तथा आर्थिक तंगी, अर्थकेन्द्रितता, छोटापन, विक्षिप्तता और अकेलेपन की पीड़ा को भोगनेवाले महानगरीय व्यक्ति को चित्रित किया है । महानगरों की व्यस्तता के कारण स्त्री-पुरुषों में आनेवाली सम्बन्धों की शिथिलता को भी अत्यंत विस्तृत ढंग से चित्रित किया है । साथ ही साथ महानगरों में परम्परागत वेश्या-वृत्ति का बदलता रूप भी चित्रित किया है । देवेशजी खुद एक अध्यापक होने के नाते उन्होंने विश्वविद्यालय और शिक्षा-क्षेत्र में व्याप्त अनेक बुराईयों और भ्रष्टाचार की समस्या की ओर भी ध्यान दिया है । उन्होंने अस्पतालों की गंदगी और डॉक्टरों घिनौने कारनामों की ओर भी दृष्टिपात किया है । समग्रतः हम कह सकते हैं कि महानगर से सम्बन्धित लगभग सभी समस्याओं का चित्रण देवेशजी के उपन्यासों में हुआ है ।

तीसरे प्रश्न के उत्तर में हम कह सकते है कि देवेशजी ने आम आदमी का अर्थात निम्न मध्यवर्गीय और मध्यवर्गीय माहौल में पलें-बढ़े व्यक्ति का और उसकी समस्याओं का चित्रण किया है । 'भ्रमभंग' का चंदन, 'प्रिया शबनम !' का मंगल, 'काँचघर का सुहास और अलग-अलग मेजों पर आनेवाले सभी चरित्र, 'इसीलिए' का मनोरंजन अवस्थी, 'अपना अपना आकाश' का प्रकाश, 'जनगाथा' का लेखक शिवनाथ और पत्रकार जोशी, 'गुरु-कुल' का शितांशु लगभग उपन्यासों के सभी नायक मध्यवर्गीय युवक हैं और उपन्यासों में उनका जीवन संघर्ष चित्रित हुआ है ।

चौथे प्रश्न के उत्तर में हम कह सकते है कि देवेशजी ने विस्तृत रूप में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की चर्चा की है । स्त्री पुरुष सम्बन्धों में महानगरीय व्यस्तता के कारण उनके टूटने तक की स्थिति का वर्णन आया है । इन सम्बन्धों में अर्थकेन्द्रितता का भाव दिखाई देता है और महानगरो के यांत्रिक और सम्वेदनहीन संसार में भावात्मक सम्बन्ध न के बराबर होते जा रहे हैं । मध्यवर्गीय और अभिजात्य नारी भी महानगरों की पैसे की दुनिया में अपने शरीर का सौदा करती हुई दृष्टिगत होती है । यहाँ तक कि माँ-बेटा, भाई-बहन के काम-सम्बन्धों की चर्चा भी देवेश जी के उपन्यासों में हुई है ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यासों में विस्तृत रूप में महानगरीय जीवन को अभिव्यक्ति दी है । देवेशजी के उपन्यासों को पढ़ने के पश्चात महानगरोमें जीवन-यापन करनेवाले सामान्य, मध्यवर्गीय स्त्री-पुरुषों की भयावह स्थिति का बोध होता है और विलासिता के बढ़ते चरण और अर्थकेन्द्रितता के कारण बदलनेवाले सम्बन्धो के अनेक संदर्भों को हम देख सकते हैं । अन्ततः हम कह सकते हैं कि देवेश ठाकुर पूर्ण रूप से महानगरीय सम्वेदना के उपन्यासकार हैं ।

❑❑❑

संदर्भ ग्रन्थ-सूचि

आधार ग्रंथ

१. डॉ. ठाकुर देवेश - भ्रमभंग - भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९७५
२. डॉ. ठाकुर देवेश - प्रिय शबनम ! - पराग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९७८
३. डॉ. ठाकुर देवेश - काँचघर - मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ/दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९८१
४. डॉ. ठाकुर देवेश - इसीलिए - देवदार प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९८४
५. डॉ. ठाकुर देवेश - अपना अपना आकाश - वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९८४
६. डॉ. ठाकुर देवेश - जनगाथा - वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९८६
७. डॉ. ठाकुर देवेश - गुरु-कुल - संकल्प प्रकाशन, मुंबई, प्रथम संस्करण, १९८९

संदर्भ ग्रंथ

१. कमलेश्वर - नयी कहानी की भूमिका - शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली. प्रथम संस्करण, १९७८
२. डॉ. गौतम वीणा - आधुनिक हिन्दी नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना - संजय प्रकाशन, दिल्ली. प्रथम संस्करण, १९८४
३. प्रा. पाण्डेय सतिश - कथाशिल्पी देवेश ठाकुर - अरविंद प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण, १९८६
४. डॉ. मिश्र रामदरश - हिन्दी उपन्यास के सौ वर्ष - गिरनार प्रकाशन, प्रथम संस्करण, १९८४
५. संपा. डॉ. यादव नंदलाल - देवेश ठाकुर - व्यक्ति, समीक्षक और कथाकार - मिनाक्षी प्रकाशन, दिल्ली, १९८३
६. डॉ. वार्ष्णेय लक्ष्मीसागर - द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास - राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली. प्रथम संस्करण, १९७३
७. डॉ. शुक्ल भानुदेव - देवेश ठाकुर : प्रश्नों के घेरे में - संकल्प प्रकाशन, मेरठ, प्रथम संस्करण, १९८६
८. डॉ. सिंह कुँवरपाल - हिंदी उपन्यास सामाजिक चेतना - पाण्डुलिपि प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९७६
९. डॉ. सिंह पुष्पपाल - समकालीन कहानी : युगबोध का संदर्भ - नैशनल पब्लीकेशन हाऊस, नई दिल्ली. प्रथम संस्करण, १९८६
१०. सीकरी मीरा - नई कहानी - पराग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९८४

शोध-प्रबंध

१) डॉ. सिंह लालसाहब सीताराम सिंह - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में युग बोध - (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध) बम्बई विश्वविद्यालय, १९८०
२) डॉ. सिंह सुशीला - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में महानगरीय परिवेश - (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध) बम्बई विश्वविद्यालय, १९८०

पत्रिका

सम्पा. द्विवेदी हरिशंकर - अनुगमन - इलाहाबाद १८ जुलाई १९८५.